Chapter- 5

दुगनी खुशी

STUDY NOTES

MIND MAP

पाठ प्रवेश

जीवन को बेहतर और सुखद बनाने के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं और व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है। लेकिन इनमें सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति मित्र होता है। मित्र की प्राप्ति होने के पश्चात जीवन बेहद सुखदायी बन जाता है।

एक सच्चे मित्र के साथ हर प्रकार की बात साझा की जा सकती है। मित्र वह व्यक्ति होता है, जो बिना किसी स्वार्थ के जरूरत पड़ने पर हमेशा सहायता करने के लिए तत्पर हो। मित्रता उन्हीं लोगों के बीच लंबे समय तक रहती है, जो लोग बिना किसी स्वार्थ के एक दूसरे की सहायता करते हैं।

साथ ही किसी भी परिस्थिति में उचित सलाह देने वाला एक सच्चा मित्र होता हैं। यह मित्रता एक प्रकार की सच्ची मित्रता कहलाती है। इस दुनिया में हजारों प्रकार के मित्र आपको मिल जाएंगे, लेकिन सच्चे मित्र को ढूंढना काफी मुश्किल है।हमारे इतिहास में कई ऐसे ही दोस्ती के उदाहरण है, जैसे कृष्ण और सुदामा की दोस्ती, महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक के बीच की मित्रता, राम और सुग्रीव की दोस्ती, पृथ्वीराज चौहान और चंद्रवरदाई की दोस्ती।सच्ची दोस्ती में कोई गरीबी अमीरी भी नही देखता है और इसी लिये ये रिस्ता बहुत ही पवित्र रिश्ता होता हैं।

पाठ सार

सच्चा मित्र जीवन को नई दिशा प्रदान करता है । मित्र हमें नई राह दिखाता है । ठीक उसी प्रकार इस कहानी में एक सच्चा मित्र के बारें में बताया गया है । कहानी इस प्रकार है -

संजय दसवी कक्षा में पढ़ता है । हमेशा वह स्कूल साइकिल से जाता है । जनवरी का महिना है । कड़ाके की ठंड पड़ रही थी । हमेशा की तरह वह साइकिल ले कर स्कूल केलिए निकाल पड़ा । स्कूल जाते समय रास्ते में एक कार ने उसके पीछे से टक्कर मारी । इसीसे उसका बाएं टाँग का हड्डी टूट गया । उसके उपरांत डॉक्टर ने हड्डी को जोड़ कार प्लैस्टर चढ़ा दिया । डॉक्टर ने उसे घर में आराम करने केलिए कहा । दो महीने के बाद बोर्ड परीक्षा है । परीक्षा के चिंता में वह सारा दर्द भूल गया । उसे लगा शायद वह परीक्षा नहीं दे पाएगा । इसी चिंता के कारण वह चिड़चिड़ा सा हो गया । संजय को इस परेशानी से निकालने केलिए संजय की माँ उसके क्लास टीचर से मिली । टीचर ने किसी छात्र का नोटबुक देने केलिए कह दिए । परीक्षा नजदीक है । कौन नोटबुक दे सकता है ?लेकिन अमर नामक एक छात्र नोटबुक देने केलिए राजी हो गया जोकि संजय के घर के थोड़े दूर रहता था । दूसरे दिन अमर

संजय के घर पहुँचा और उसे नोटबुक दे दिया और कक्षा में कया पढ़ाई हुआ उसके बारें में भी चर्चा किया । येसा सिलसिला चलता रहा ।जो पाठ स्कूल में पढ़ाया जाता था उसको अमर संजय के घर आकर संजय को समझाता था । स्कूल न जा कर भी संजय अमर के माध्यम से कक्षा में क्या होता था उसकी पूरी जानकारी मिलती थी । एक दिन संजय की माँ अमर से बोले बेटा तुम कितना परिश्रम करते हो ।इसके उत्तर में अमर ने कहा संजय मेरा भाई जैसा है । कभी कभी मुझे गणित का प्रश्न का उत्तर न आए तो संजय उसका हल बता देता है ।यह सुनकर संजय के पिता भी खुस हो गए । संजय भी येसा दोस्त पाकर गर्वित हो उठा।

संजय की माँ अमर से पूछे कि यह संस्कार कहाँ से सीखे ?अमर ने कहा मुझे किसिने नहीं सिखाया । मैं अपनी माँ और पिताजी से यह देखकर सिखा हूँ । मेरे माता पिता दूसरों को मदद करके आनंद प्राप्त करते हैं । अमर ने कहा हम दोनों मिलकर सिलेबस पूरा कर दिया । संजय का खुशी देखकर मेरी खुशी दुगनी हो गई । येसी मित्रता की भावना देखकर संजय के माता पिता खुस हो गए । उसके उपरांत संजय की माँ अमर को उपहार दिए ,लेकिन अमर लेने से इनकार कर दिया और कहा मैं यह उपहार पाने केलिए नहीं किया ,कृपया मेरी खुशी को न छीने । यह कहकर वह अपनी घर की तरफ चल पड़ा ।

****

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow